Received: Sep '23
Revised:
Accepted: Oct '23

© 2023 by the authors. This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY) license (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/).

MAGIC, TANTRA AND MANTRA: A KIND OF BUSINESS
जादू, तंत्र और मंत्रः व्यापार का एक प्रकार

Dr. Archana Godara
1Assistant Professor, Department of Sociology, Govt. N.M. College, Hanumangarh, Rajasthan, India
E-mail- archanamps@gmail.com

ABSTRACT

Man is a curious creature, but at the same time, he is also considered the most fearful creature. Who was afraid of the moon, sun, and natural calamities and started worshipping them all? Being curious, he is always engaged in discovering something new. He believes in miracles and believes that there is a supernatural power that is more powerful than man and can do anything. Therefore, he wants to control the power of this cosmic power. Those who practice magic and tantra-mantra are considered to be the masters of these supernatural powers, and they try to eliminate problems with their help. People are drawn towards them in the hope of quick treatment. Therefore, keeping in mind the increasing confidence and demand, people have now started making it their means of employment. The result of this is that today their number is increasing in every village and city.

मनुष्य एक जिज्ञासु प्राणी है, परंतु उसके साथ ही वह सबसे डरपोक प्राणी भी माना जाता है। जिसने चांद, सूरज तथा प्राकृतिक आपदाओं से भयभीत होकर इन सबको पूजना शुरू कर दिया। जिज्ञासु होने के कारण वह हर पल नये की खोज में लिप्त रहता है। वह चमत्कारों में विश्वास करता है तथा यह मानता है कि अलौकिक शक्ति होती है जो मनुष्य से ज्यादा ताकतवर होती है और वह कुछ भी कर सकती है। अतः वह इस आलोकिक शक्ती की शक्ति को अपने नियंत्रण में करना चाहता है। जादू,तंत्र–मंत्र करने वालों को इन आलोकिक शक्तियों का स्वामी माना जाता है और वह समस्याओं को उनकी सहायता से समाप्त करने का प्रयास करते हैं। जल्द से जल्द उपचार की उम्मीद से लोग उनकी तरफ खिंचे चले जाते हैं। अतः बढ़ाते विश्वास और मांग को ध्यान में रखते हुए लोगों अब इसे अपना रोजगार का साधन बनाने लगे हैं। इसी का परिणाम है कि आज हर गाँव एवं शहरो में इनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

Keywords: लोक विश्वास, अंधविश्वास, चमत्कार, तांत्रिक, ओझा, व्यवसाय।

प्रस्तावना

वर्तमान वातावरण में प्रत्येक व्यक्ति रातों–रात अपने जीवन में बदलाव लाना चाहता है। पहला बदलाव वह अपने आर्थिक स्तर में लाना चाहता है जिसके लिए वह सही या गलत पर ज्यादा ध्यान नहीं देता। उसका एक ही मुख्य उद्देश्य बनता जा रहा है, वह धन प्राप्ति। वहीं दूसरी तरफ मनुष्य अपनी समस्याओं से भी चुटकी में निजात पाना चाहता है। इसलिए वह किसी भी प्रकार के उपाय करने के लिए तैयार रहता है। जिसके भविष्य में होने वाले प्रभावों एवं परिणामों की वह चिंता नहीं करता। यह दोनों ही दृश्य समाज में एक व्यापार को बढ़ावा दे रहे हैं, जो है जादू, तंत्र और मंत्र।

आज चाहे गांव हो या शहर हर कदम पर इसकी चर्चा है। व्यक्ति अपनी विभिन्न समस्याओं का उपाय इन्हीं तांत्रिक और बाबाओ के पास ढूंढने का प्रयास करता है क्योंकि यही वह जगह है जहां उन्हें चमत्कार होने की संभावना तथा कुछ को गहरा विश्वास भी होता है। ये संभावना एवं विश्वास ही है जो इस क्षेत्र में कार्य करने वालों की संख्या बढ़ती जा रही है। इस कार्य को करने वाला स्वयं को अलौकिक शक्ति का स्वामी बताता है तथा उसी के द्वारा चमत्कार कर समस्या का समाधान करता है। यदि वह अपने कार्यों से लोगों (ग्राहकों) को संतुष्ट कर देता है, तो उसके पास लोगों की लंबी–लंबी लाइन लगनी शुरू हो जाती है।

जादू, तंत्र–मंत्र कुछ समय पूर्व की नई घटना या दृश्य नहीं है बल्कि विश्व के बहुत से देश में वर्षों से प्रचलित तथा कुछ देशों में इन सब पर बहुत अधिक विश्वास किया जाता है। विश्व की विभिन्न जनजातियों में जादू, तंत्र और मंत्र एक चिकित्सक के उपचार तथा एक वैज्ञानिक की खोज के बराबर माना जाता है।

एशिया में प्रथम सहस्राब्दी के मध्य से वर्तमान तक किसी न किसी रूप में इसका प्रयोग होता रहा है। भारतीय परंपरा में श्री विद्या, अघोरी, बंगाली शक्ता, वैष्णव परंपराएं तंत्र–मंत्र की परंपराओं से परिपूर्ण है।[1]

सैम्युअल का मन्ना है कि विश्व के अधिकांश हिस्सों एवं एशिया में तांत्रिक–मांत्रिक परंपराएं भारतीय शामनिक संस्कृति के महापुरुषों से जुड़ी हुई है।[2]

भारत में आज भी बहुत बड़ी संख्या में लोग जादू, टोने तथा तंत्र में विश्वास करते हैं। जादू–टोना, भूत, प्रेत तथा टोटका आदि का संबंध ऋग्वेद काल से माना जाता है। अथर्ववेद में तो अधिकांश इन्हीं विषयों का वर्णन है।[3] शुरुआत चाहे जहां से भी हुई, लेकिन वास्तविकता यह है कि अधिकांश जनता इन सब में विश्वास करती है या

इससे डरती है। यही कारण है कि डरी हुई जनता से पैसे निकलवाने का यह एक सरल साधन बन गया है और लोगों ने इन विद्याओं को सीख कर इसे स्वयं का व्यवसाय बनाना शुरू कर दिया है।

लोक विश्वास

विश्वास जीवों का मनोवैज्ञानिक पहलू है जो प्राणी जीवित है। उसमें विश्वास भी जीवित होता है। यह मनुष्य जीवन की अनिवार्य प्रवृत्ति है जिसके आधार पर वह तार्किक बनता है। लोक विश्वास को सामान्यतःअंधविश्वास माना जाता है, जबकि यह पूर्ण सत्य नहीं है। जैसे विश्वास का सुदृढ़ विज्ञान होता है, उसी प्रकार लोक विश्वासों का भी एक तर्क होता है, एक सुदृढ विज्ञान होता है।लोक विश्वास की विषय वस्तु तथा क्षेत्र जीवन की तरह असीम और अनंत होती हैं। मनुष्य में विश्वास की प्रवृत्ति के कारण मूल रूप से उसके अंदर का भय होता है।

बील्स तथा हाइजर के अनुसार– जादू संपूर्ण सृष्टि को नियंत्रित करने के लिए कुछ तकनीकी एवं पद्धतियों का समूह है, जो कि इस धारणा पर आधारित है कि यदि कुछ प्रक्रियाओं को सूक्ष्म रूप से काम में लिया जाए तो कुछ परिणाम अवश्य निकलते हैं। यह सृष्टि के नियमित कार्य कारण की धारणा पर अवलंबित है।[4]

विश्वास ही होता है जो नवीन विचारों की खोज करता है। सालों पुराने विश्वासों एवं परंपराओं को जीविण्त रखता है। इसलिए मनुष्य में यह लोक विश्वास प्रचलित है कि अलौकिक शक्ति है जो मनुष्य से अधिक शक्तिशाली है। जिससे कुछ भी चुटकियों में करवाया जा सकता है तथा उनको केवल बाबा, पुजारी या तांत्रिक ही वश में कर सकते हैं।

प्रचलित अंधविश्वास

अंधविश्वास शब्द का अर्थ है– आंखें बंद करके किसी बात पर विश्वास करना अर्थात अतार्किक विश्वास अथवा तर्कहीन विश्वास।

जब व्यक्ति किसी वस्तु, स्थिति तथा क्रिया पर विश्वास करता है, परंतु उसका कोई तर्क उसके पास नहीं होता है इसलिए यह तर्क शून्य विश्वास होते हैं तो ऐसा विश्वास अंधविश्वास कहलाता है। जादू तथा तंत्र– मंत्र में विश्वास करना भी अंधविश्वास की श्रेणी में आता है क्योंकि यह वैज्ञानिक सोच के विपरीत माना जाता है। विज्ञान में हर क्रिया व परिणाम का तर्क, नियम एवं परिणाम मौजूद होता है। ऐसा इन क्रियाओं में सामान्यतः नहीं होता है। तांत्रिक द्वारा छूने, फूंक मारने तथा झाड़ा देने से ही तुरंत रोग व समस्या समाप्त हो जाती है। ऐसे अंधविश्वास के प्रचलित होने के कारण ही तंत्र–मंत्र को बढ़ावा मिलता है। जादू – टोना, ताबीज, मंत्र तथा मणि आदि अंधविश्वास के तत्व है।[5] अंधविश्वास सार्वदेशिक और सार्वकालिक है। विज्ञान की रोशनी में यह गुम रहते हैं।

तंत्र–मंत्र करने वालों का स्वरूप

इस प्रकार के व्यक्तियों को शामन, ओझा या बाबा कहा जाता है। कुछ लोगों इन्हें चिकित्सक भी मानते हैं। आदिवासी समाजों में यह चिकित्सक की भूमिका में होते हैं, जो सभी समस्याओं का उपचार सरलता से करते हैं। इसलिए इनका पद उच्च माना जाता है तथा यह बहुत ही प्रतिष्ठा प्राप्त व्यक्ति होते हैं। यह धार्मिक अनुष्ठान आदि भी करते हैं। मध्य प्रदेश के अधिकांश जनजातीयां अपने ओझा को बैगा कहती हैं। ये झाडू – फूंक का कार्य करते हैं। कवांर जनजाति में तो यह भी मान्यता है कि हर गांव में एक टोनही रहती है जो लोगों को डायन कर्म से क्षति पहुंचाती है। बैग इन टोहनियों से गांव की रक्षा करता है।[6]

भारत में बंगाल में भी तंत्र–मंत्र प्रचलित है। यह अपने काले जादू के लिए जाना जाता है। जादू केवल भारत में ही नहीं बल्कि बर्मा, थाईलैंड, मलेशिया, चीन, जापान तथा अफ्रीका आदि देशों में भी प्रचलित है तथा इन्हें करने वाले को बाबा, पुजारी, तांत्रिक, अघोरी, साधु, मौलवी, पुरोहित, जादूगर आदि नामों से जाना जाता है जो तंत्र तथा मंत्र दोनों के माध्यम से चमत्कार करने वाले माने जाते हैं।

तांत्रिकों के पास जाने का कारण

लोगों को लगता है कि उनकी ऐसी बहुत सारी समस्याएं हैं, जिनका उपचार डॉक्टर नहीं कर सकता। जैसे की बहुत उपचार करने के बाद भी बच्चा नहीं होना, स्वास्थ्य ठीक नहीं होना,मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति का सही नहीं होना, घर में पैसे की समस्या का समाधान नहीं होना, नोकरी प्राप्त करने मे सफलता प्राप्त करना, किसी को शारीरिक या मानसिक रूप से बीमार करना या नुकसान पहुंचवाना, भूत – प्रेत से छुटकारा पाना आदि ऐसी अन्य बहुत सारी समस्याएं हैं, जिनका उपचार किसी डॉक्टर के पास नहीं होता है। मानसिक

रूप से बीमार व्यक्ति को वह किसी मनोचिकित्सक के पास ले जाना उचित नहीं समझते क्योंकि उन्हें लगता है कि वह समाज में हंसी का पात्र बन जाएंगे कि इनका इलाज किसी पागलों के डॉक्टर के पास चल रहा है। अतः वह इन बाबाओं से ही उपचार करवाना उचित समझते हैं।

उपचार की विधियां

तांत्रिक पर विश्वास करने वाला व्यक्ति विभिन्न उद्देश्यों से उसके पास जाता है। व्यक्ति का मानना होता है कि उसकी समस्या ऐसी है जिसका उपचार डॉक्टर या किसी अन्य व्यक्ति के पास नहीं है। इसे तो केवल चमत्कारों से ही सही किया जा सकता है। तांत्रिक द्वारा उपचार हेतु की जाने वाली विधियां निम्न प्रकार है–

- शरीर के किसी अंग पर ताबीज बांधना
- ताबीज का गोल पिलाना
- ताबीज के पानी को शरीर तथा स्थान पर छिड़कना

- झाड़ू या चाकू से झाड़ा मारना, पूजा पाठ करना
- मंत्र पढ़ना
- फूंक मारना
- धागा या डोरा बांधना आदि

यह क्रियाएं कर वह समस्या का समाधान करता है। वह परेशान व्यक्ति को संतुष्ट करके घर भेजता है। यह एक मनोवैज्ञानिक उपाय भी माना जाता है कि किसी को विश्वास में दिया जाए फिर उसे निर्देश दिया जाए। व्यक्ति निर्देशों के पालन करते हुए स्वयं को सुरक्षित एवं सही महसूस करता है तथा उसमें यह विश्वास उत्पन्न हो जाता है कि सब सही हो रहा है।

कभी–कभी तांत्रिक या ओझा व्यक्ति के घर जाकर भी उपाय करता है। वह कुछ वस्तुएं उसके घर में गाड़ता है या वहां रखने के लिए देता है। प्रत्येक ओझा का अपना–अपना उपचार करने का तरीका होता है परंतु उद्देश्य व्यक्ति में विश्वास जगाना ही होता है।इन उपायों से व्यक्ति स्वयं को बेहतर महसूस करने लगता है तथा इस प्रकार से उत्पन्न आत्मविश्वास उसे अन्य परेशानियों से लड़ने में सहायता प्रदान करता है। परंतु वह हर छोटी बड़ी समस्या के लिए उन तांत्रिकों पर निर्भर हो जाता है।

निष्कर्ष

आज विश्व के बहुत से देशों में जादू, तंत्र–मंत्र पर विश्वास किया जाता है। सामान्य जनता को तांत्रिक या ओझा से डर लगता है परंतु फिर भी कोई समस्या आने पर उनके पास जाने का प्रयास किया जाता है क्योंकि नजर लगने या घबराहट होने का इलाज उन्हें डॉक्टर के पास नहीं मिलता तो वे इनके पास जाने का प्रयास करते हैं। उन्हें यह सरल और सस्ता साधन प्रतीत होता है, जो जल्द से जल्द उन्हें इस समस्या से निकल सकता है। इन पर विश्वास किए जाने वाले अंधविश्वास का ही परिणाम है कि इसको करने वाले की संख्या बढ़ती जा रही है और यह एक प्रकार का व्यवसाय बनता जा रहा है। क्यों कि यह एक सत्य है कि जैसी मांग होगी, वैसी ही आपूर्ति होगी। ये ऐसा कार्य है जिसमें ग्राहक अपने–अपने आप चला आता है और लंबे समय तक जुड़ा रहता है। इसमें व्याप्त भय ही मुख्य कारण होता है कि व्यक्ति आसानी से ओझाओं से पीछा नहीं छुड़ा पाते और उन्हें पैसा तथा अन्य साधन उपलब्ध कराते हैं। जितना अधिक यह जंगली या पिछड़ी जनजातियों में प्रचलित था। उतना ही अधिक यह पढ़े–लिखे सभ्य समाजो में भी मौजूद है। प्रत्येक गांव तथा शहरों में यह सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं। यह भोली – भाली जनता को बहकते हैं तथा चमत्कारों के नाम से स्वयं की ओर आकर्षित करते हैं। इस प्रकार फिर उनसे काम के बदले में पैसा प्राप्त करते हैं। वर्तमान में यह सरलता से अधिक से अधिक पैसा कमाने का एक साधन बन गया है। ओझा का उद्देश्य केवल सेवा करना ही नहीं रह गया है बल्कि यह आजीविका कमाने का एक तरीका बन गया है। समय के साथ–साथ जितना तेजी से विज्ञान का विकास हो रहा है, उतनी ही तेजी से इनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

संदर्भ सूची

1. पुनियानी, रामः धर्म का बाजार, उद्भभावना प्रकाशन, राजनगर, गाजियाबाद
2. ब्रह्मा, एन. के.ः फिलॉसोफी ऑफ हिंदू साधना, लंदन, 1939, उद्धत आचार्य परशुराम चतुर्वेदी, रहस्यवाद, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद–5, 1973
3. मौर्य, हजारीलालः सामाजिकता के सार्व, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग भारत सरकार द्वारा प्रायोजित
4. अरविंदः उत्तर योगी, लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1972
5. दाभोलकर, डॉ. नरेंद्रः विश्वास और अंधविश्वास, राजकमल प्रकाशन, सार्थक 2020